DATE 14.10.24
PAGE No 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - रोमा रानी एवं सुमनशर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 टीले का पत्थर) भाग 1'

पुस्तक - नवतरंग - 4

प्यारे बच्चो! सुप्रभात।

आज हम हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग के भाग-4 के पृष्ठ - 63 पर दिए पाठ-9 'टीले का पत्थर' को पढ़ेंगे। कक्षा चौथी के सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी पुस्तक का पृष्ठ 63 खोलकर रखें साथ ही लिखित कार्य करने के लिए अभ्यास-पुस्तिका भी खोलें। सब बच्चे पाठ पढ़ने के लिए तैयार रहें। मैं पाठ पढ़ाते समय आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। इन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का समय लेंगे। यह आवाज़ सुमनशर्मा की है। सभी बच्चे ध्यानपूर्वक पाठ को सुनेंगे और मन-मन में पाठ को बोलकर पढ़ने का प्रयास करेंगे।

बच्चो! यह पाठ - 'टीले का पत्थर' एक कलाकार की कहानी है जो पत्थर की मूर्तियाँ बनाता था। बच्चो, कला हर व्यक्ति के अंदर विद्यमान होती है। बस, उसे बाहर निकालने की ज़रूरत होती है। कला में निपुण व्यक्ति कलाकार कहलाता है।

कलाकार को प्रकृति की प्रत्येक चीज़ में सुंदरता दिखाई देती है, चाहे वह निर्जीव पत्थर ही क्यों न हो। कला को प्रोत्साहन देने से न केवल अन्य लोगों में छिपा हुनर उभरकर सामने आता है बल्कि यह एक सुंदर संसार की रचना में भी सहायक है।

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No. 2

कक्षा - चौथी अध्यापिकाएँ - रोमा रानी, सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 9 'टीले का पत्थर')

बच्चो ! इस पाठ में एक मूर्तिकार के बारे में बताया गया है जो नदी के किनारे एक छोटे से गाँव में अपनी पत्नी और प्यारी-सी बिटिया के साथ रहता था। प्रतिदिन शाम को वह मूर्तिकार नदी के किनारे टहलता हुआ दूर तक निकल जाता था और किनारे पड़े पत्थरों को देखकर कल्पना में खो जाता था। वह उन पत्थरों पर मूर्तियाँ बनाने के बारे में सोचता रहता था।

उसकी बिटिया भी कभी-कभी पिता के साथ नदी किनारे घूमने जाती और वहाँ से छोटे-छोटे पत्थर उठाकर अपनी झोली में ले आती थी। उन पर वह अपने नन्हे-नन्हे हाथों से कुछ नक्काशी करती तो उसके पिता यह देखकर बहुत प्रसन्न होते और उसे प्रोत्साहित करते। कभी-कभी मूर्तिकार अपनी बेटी की कला को और सँवार देते, इससे उनकी बिटिया खुश हो जाती थी। बच्चो ! अब मैं आपको कुछ शब्दों के अर्थ बताने जा रही हूँ जो इस प्रकार हैं - (i) कल्पना - सोचना, विचारना (ii) प्रोत्साहन - बढ़ावा, उत्साह बढ़ाना (iii) हुनर - कला (iv) उभरकर - निकलकर (v) रचना - बनाना (vi) सहायक - मददगार (vii) सँवार - सजा या ठीक करना (viii) झोली - थैली

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No 3

कक्षा- चौथी शिक्षिकाएँ - रोमा रानी एवं सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-9 'टीले का पत्थर')

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न करूँगी। यहाँ आप तीन मिनट का समय लेकर इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न-1. मूर्तिकार कहाँ रहता था?
प्रश्न-2. मूर्तिकार शाम को कहाँ जाता था?
प्रश्न-3. मूर्तिकार की बेटी छोटे-छोटे पत्थरों को उठाकर क्यों लाती थी?

बच्चो! आपका समय समाप्त हुआ। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं-

उत्तर-1. मूर्तिकार नदी के किनारे बसे एक छोटे-से गाँव में रहता था।
उत्तर-2. मूर्तिकार प्रतिदिन शाम को नदी के किनारे टहलने जाता था।
उत्तर-3. मूर्तिकार की बेटी छोटे-छोटे पत्थरों को अपने नन्हे-नन्हे हाथों से नक्काशी करने के लिए उठाकर लाती थी।

बच्चो! अब हम पाठ को आगे पढ़ते हैं। सब बच्चों का ध्यान पुस्तक पर होना चाहिए।

एक दिन शाम को हर रोज़ की भाँति मूर्तिकार टहलने निकला। बेटी भी साथ हो ली। नदी के किनारे ठंडी-ठंडी हवा का आनंद लेते हुए पिता और बेटी दूर निकल गए और एक टीले पर जा पहुँचे। वहाँ एक बड़ा-सा सफ़ेद पत्थर देखकर मूर्तिकार का काल्पनिक मन जाग गया। उसके पास बैठकर वह कुछ सोचने लगा। पत्थर भारी था, इसे उठाकर ले जाना मुमकिन न था। मूर्तिकार ने निश्चय किया कि अगले दिन सुबह यहीं बैठकर इस पत्थर से एक मूर्ति का निर्माण करेगा।

अँधेरा काफ़ी हो गया था। पिता और पुत्री वापस घर लौट आए।

अगले दिन सुबह मूर्तिकार अपने औज़ार लेकर उसी टीले पर पहुँच गया, जहाँ वह सफ़ेद पत्थर उसका इंतज़ार कर रहा था। बस, वह उस पत्थर को तराशने में जुट गया। कब दोपहर होने को आई, मूर्तिकार को पता ही नहीं चला। न भूख, न प्यास, न धूप की सुध। वह अपने काम में तल्लीन था।

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No. 4

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - रोमा रानी, सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'टीले का पत्थर')

एक दिन मूर्तिकार अपनी बेटी को साथ लेकर नदी के किनारे टहलते हुए एक टीले पर पहुँच गए जहाँ उन्होंने एक बड़े सफ़ेद पत्थर को देखा और उस पत्थर पर एक मूर्ति बनाने का निश्चय किया। अगले दिन वह अपने सभी औज़ार लेकर उस सफ़ेद पत्थर के पास पहुँचा और उसे तराशने में लग गया। वह अपने काम में इतना तल्लीन था कि उसे न भूख लगी न प्यास।

इधर बेटी और पत्नी मूर्तिकार की राह देख रही थीं। दोपहर तक भी जब वह न आया, तो पत्नी ने खाना बाँधा और बेटी को उसे खोजने भेज दिया। बेटी अपने कुछ साथियों के साथ उसे खोजते हुए टीले पर जा पहुँची।

मूर्तिकार थका-हारा अपने काम में मग्न था। बेटी ने पिता के हाथों से हथौड़ी और छेनी लेकर एक तरफ़ रख दी। सामने खाना रखकर बोली, "बाबा, कुछ खा लो, मुझे भी भूख लगी है।" खाना खाकर मूर्तिकार ने प्यार से बेटी के सिर पर आशीर्वाद भरा हाथ रखा। फिर अपने काम में जुट गया। बेटी थोड़ी देर तक पिता को ध्यान से देखती रही। फिर बोली, "बाबा, हम भी आपका हाथ बँटाएँ?"

"नहीं बिटिया, तू घर जा। माँ राह देखती होगी।"

बच्चो! जब मूर्तिकार दोपहर तक वापस न आया तो उसकी पत्नी ने अपनी बेटी को खाना बाँधकर दिया और मूर्तिकार को खोज के लिए भेजा। वह, काम में व्यस्त अपने पिता के पास पहुँच गई। मूर्तिकार ने भोजन किया और अपनी बेटी को घर वापस भेज दिया।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। इस पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे।

(पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner

DATE 14.10.24
PAGE No 5

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - रोमा रानी एवं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'टीले का पत्थर')

आशा है पढ़ाया गया पाठ सब बच्चों को समझ में आ गया होगा। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी, जिसे आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य :-

सब बच्चे पृष्ठ-66 पर लिखे शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

* हिंदी का शब्दकोश लेकर कठिन शब्दों को ढूँढ़ने का प्रयास करेंगे। पाँच शब्द प्रतिदिन शब्दकोश में से लेकर याद करेंगे।
* लेख पर विशेष ध्यान दें।

(अंतिम पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner